राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ

स्थापना

वर्ष 1995 में उ0प्र0 शासन द्वारा संग्रहालय निर्माण का निर्णय लिया गया, तत्क्रम में वर्ष 1997 में टास्कफोर्स द्वारा की गई संस्तुतियों के अनुरूप उ0प्र0 शासन के अधीन उ0प्र0 संग्रहालय निदेशालय द्वारा संचालित राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ की स्थापना हुई। जिसका औपचारिक लोकार्पण 10 मई, 2007 को हुआ।

क्षेत्रीय/विषयगत महत्व

जनपद मेरठ 28^0 47^0 तथा 29^0 18^0 अक्षांश उत्तरी एवं 77^0 7^0 तथा 78^0 7^0 देशान्तर पूर्वी रेखाओं के मध्य स्थित है । मेरठ देष की राजधानी दिल्ली से लगभग 70 किमी. उत्तर–पूर्व में स्थित है, जहाँ रेल एवं बस मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है । प्राचीन काल में मेरठ ऊपरी गंगा यमुना के दोआब क्षेत्र में कुरू प्रदेश के अन्तर्गत आता था । वर्तमान में जनपद मेरठ उत्तर प्रदेश के पश्चिमी छोर पर गंगा–हिण्डन नदियों के दोआब क्षेत्र में स्थित है। इसके उत्तर में जनपद मुजफ्फरनगर दक्षिण में गाजियाबाद पश्चिम में बागपत तथा पूर्व में बिजनौर व ज्योतिबाफुले नगर जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है । मेरठ देष की राजधानी दिल्ली से 65 किमी0 उत्तर–पूर्व तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 461 किमी0 उत्तर पश्चिम में स्थित है, यहाँ रेल तथा बस द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है तथा यह उत्तर रेलवे के दिल्ली–मेरठ–सहारनपुर रेलवे मार्ग एवं उत्तर–पुर्वी रेलवे के लखनऊ–मुरादाबाद–मेरठ–सहारनपुर मुख्य रेलवे मार्गों के किनारे स्थित है ।

मेरठ का शुद्ध नाम मयराष्ट्र है । इस विषय में दो जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं । पहली जनश्रुति के अनुसार दिति के पुत्र नमुचि के सहोदर, हेमा के पति मंदोदरी के पिता और रावण के श्वसुर मय नामक दानव ने इस नगरी को बसाया था । इसी कारण मेरठ को मयदन्त का खेड़ा कहा जाता है, मेरठ की प्रचीन आबादी तथा किले वाले भाग में वर्तमान मोरीपाड़ा, शुक्लों का चौक, कोतवाली, मशायखान(इस्माइलनगर) आदि मोहल्ले आते हैं । मय का उल्लेख वाल्मिकी रामायण में आया है । दूसरी जनश्रुति के अनुसार महाभारत नामक महाकाव्य में वर्णित खाण्डवदाह के समय अर्जुन द्वारा अपनी रक्षा के प्रत्युपकार में दानवों के शिल्पी त्रिपुर रचयिता विश्वकर्मा मय ने कृतज्ञतावश श्रीकृष्ण के आदेश पर युधिष्ठर के लिए एक अद्वितीय सभागृह का निर्माण किया था । युधिष्ठर ने मय के शिल्प कौशल से प्रसन्न होकर दान में कुछ भूमि दी थी। कहा जाता है कि इसी भूमि पर मय ने मयराष्ट्र नामक नगर का निर्माण किया था तथा दानवराज मय एक अति रमणीक एवं वैभवयुक्त विषाल भवन में यहीं निवास भी करता था तथा यह भी कहा जाता है कि यहीं से प्रातः काल उसकी पुत्री मंदोदरी एक सुन्दर सरोवर के पश्चिमी किनारे पर

विल्व वृक्षों के वन्य भाग में स्थित विशाल शिव मंदिर में जलार्चन एवं शिवोपासना के लिए जाया करती थी। यह आज भी विल्वेश्वर महादेव मंदिर के नाम से जाना जाता है तथा यह मेरठ जनपद का सबसे प्रचीन मंदिर है। जाटों के अभिकथन के अनुसार इन्द्रप्रस्थ के राजा महिपाल के नाम पर इसका नाम मेरठ पड़ा लेकिन यह तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता है । मयराष्ट्र का अपभ्रंश मेरठ है जो तर्क संगत है ।

पश्चिमी उ0प्र0 स्वतंत्रता आन्दोलन का उद्भव एवं क्रान्ति स्थल रहा है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाओं से सम्बन्धित स्थान मेरठ छावनी, देवबन्द, बरेली, बुलन्दशहर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर एवं बागपत इत्यादि इसके महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मेरठ का विशिष्ट स्थान है, जहाँ से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी फूटी। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाओं एवं संस्मरणों, जीवन गाथाओं को संरक्षित करना, भावी पीढ़ी को नवीन दिशा प्रदान करना तथा राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ को राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट संग्रहालय के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाएं कैसी थीं और किस तरह से लड़ी गयीं इसका उल्लेख लिखित रूप से तो किताबों एवं अभिलेखों में मिलता है लेकिन दृश्य रूपों में इसका अभाव है, खासकर 10 मई 1857 को मेरठ में घटित घटनाएं जो आम जनसामान्य की पहुँच से दूर रही हैं । इन तथ्यों को संग्रहालय में दिखाने का अनूठा प्रयास किया गया है।

वीथिकाएं

संग्रहालय में पाँच वीथिकाएं प्रदर्शित की गई हैं । प्रथम वीथिका में पेटिंग, डायरमा एवं रिलीफ के माध्यम से विशेष रूप से 10 मई, 1857 की घटनाओं का प्रदर्शन किया गया है जो देश के अमर शहीदों को समर्पित है । प्रदर्शित चित्रों में फकीर द्वारा कालीपलटन मंदिर में क्रान्तिकारियों को उपदेश देने की घटना, 24 अप्रैल 1857 को 85 सैनिकों द्वारा विवादित कारतूस के प्रयोग से इन्कार करना एवं 9 मई, 1857 को क्रान्तिकारी सिपाहियों का सामूहिक कोर्ट मार्शल की घटना को दिखया गया है। प्रदर्शन के क्रम में 10 मई, 1857 की घटना को डायरमा के माध्यम से दिखाया गया हें जो इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, इस घटना ने सिर्फ उत्तर भारत में ही नहीं वरन पूरे देश में ऐसी लहर उत्पन्न की जिसने आज़ादी की प्राप्ति में अहम भूमिका निभाई । इसी तरह अन्य प्रमुख घटनाओं यथा– क्रान्ति के प्रस्फुटित होते ही 20वीं पैदल सेना के सैनिकों द्वारा कर्नल जॉन फिनिश पर गोली चलाना, हुआ यह था कि क्रान्ति प्रस्फुटित होते ही कर्नल जॉन फिनिश अपने सैनिकों(11वीं पैदल सेना) को समझाने ग्राउण्ड पहुँचे और सैनिकों को समझाकर एकत्र भी कर लिया था तभी तीसरी अश्वसेना का अश्वारोही सैनिक आया तथा हाथ उठाकर चिल्लाया कि रायफल्स तथा तोपखाने के यूरोपियन्स सिपाही देसी सैनिकों के गोला–बारूद तथा हथियारों पर कब्जा करने आ रहे हैं और इसी के बाद कर्नल फिनिश पर सैनिकों द्वारा गोलियाँ चलाई गयीं । इस तरह कर्नल जॉन फिनिश 10 मई 1857 को क्रान्ति के दौरान मारे जाने वाले पहले अंग्रेजी अधिकारी थे ।

अपने आक्रोश को व्यक्त करने के लिए अपनी रिहायशी बैरकों में आग लगा दिया, विक्टोरिया पार्क स्थित नई जेल तोड़कर कैद 85 सैनिकों को मुक्त कराना एवं लगभग दो हजार क्रान्तिकारियों का दिल्ली कूच करना इत्यादि घटनाओं का प्रदर्शन किया गया है । यहाँ यह भी बताते चलें कि मेरठ की घटनाओं का वर्णन तो लिखितरूप में अनेक अभिलेखों के माध्यम से उपलब्ध रहे हैं किन्तु दृश्य रूप में पहली बार इस संग्रहालय द्वारा दिखाया गया है कि 1857 में मेरठ की क्रान्ति कैसी थी । जहाँ से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की मशाल जली थी । इसका अवलोकन कर दर्शक भाव–विभोर हो उठते हैं।

द्वितीय वीथिका में फाँसी का दृष्य, 14 से 20 सितम्बर 1857 को दिल्ली में विद्रोह, कानपुर में सतीचौरा घाट का विद्रोह, लखनऊ की रेजीडेन्सी एवं रानी लक्ष्मीबाई की अंग्रेजों से लड़ाई को रिलीफ एवं पेटिंग के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है । ततक्रम में तात्या टोपे तथा कुवँर सिंह की क्रान्तिकारी गाथा का भी अवलोकन किया जा सकता है । देश विभाजन से पूर्व 1857 की क्रान्ति में पेशावर के आन्दोलन का योगदान इत्यादि को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है ।

संग्रहालय की तृतीय वीथिका में देश के अन्य भागों में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी प्रमुख घटनाओं को चित्रों एवं महत्वपूर्ण दुर्लभ अभिलेखों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है । जिसमें वीथिका संख्या तीन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगमन से लेकर दिल्ली के लाल किले के इतिहास को प्रदर्शित किया गया है तथा साथ ही साथ आई.एन.ए. के दुर्लभ छाया चित्र एवं देश के अमर स्वतंत्रता सेनानियों पर भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी भारतीय डाक टिकटों को भी आम जनसामान्य के अवलोकनार्थ प्रदर्शित किया गया है ।

चतुर्थ वीथिका में भी स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी देश विभिन्न भागों में घटित घटनाओं एवं आन्दोलनों को प्रदर्शित किया गया है । जिसमें रानी झाँसी के जीवन एवं संघर्षों, मंगल पाण्डे, उधम सिंह महात्मा गाँधी, राजाराम मोहन राय, सिस्टर निवेदिता इत्यादि प्रमुख क्रान्तिकारियों एवं देश के अग्रणी महापुरूषों के जीवन तथा चरित्र के विषय में बताया गया है । इसी वीथिका में आई.एन.ए. के सिपाही की वर्दियाँ, भारत सरकार द्वारा जारी स्मार सिक्के, चरखा एवं स्वतंत्रता सेनानियों के ताम्र पत्रों को प्रदर्शित किया गया है ।

पंचम वीथिका में पुरातात्विक पुरासामग्रियों का प्रदर्शन किया गया है । चूँकि पश्चिमी उ0 प्र0 पुरातात्विक सम्पदा से भी बहुत समृद्ध क्षेत्र रहा है । इस क्षेत्र की पुरातात्विक महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए एक पुरातात्विक वीथिका का भी गठन किया है । जिसमें इस क्षेत्र के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों के सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त पुरासामग्रियाँ/कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है । जिसमें वर्ष 2007 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार के निर्देशन में उत्खनित स्थल सिनौली, बागपत से प्राप्त अवशेष, हस्तिनापुर से सर्वेक्षण में प्राप्त कलाकृतियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र रहती हैं । इसी तरह से काकोर,

कुरडीह, काठा, इसोपुरटील इत्यादि पुरास्थलों से प्राप्त कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है । इसके साथ ही साथ भेट स्वरूप प्राप्त प्राचीन सिक्के, मनके, प्रस्तर एवं मृण मूर्तियाँ इत्यादि प्रमुख हैं ।

भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जानकारी जन सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देष्य से स्रंहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रतिष्ठत विद्वानों के व्याख्यान एवं संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है । इतिहास के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने के उद्देष्य से संग्रहालय द्वारा समय समय पर विविध प्रतियोगिताएं यथा– वाद–विवाद, भाषण, सामान्य ज्ञान एवं निबन्ध इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है ।

संग्रहालय में एक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसमें कला, इतिहास संस्कृति एवं स्वतंत्रता संग्राम इत्यादि से सम्बन्धित पुस्तकें हैं । उच्च षिक्षा से जुड़े विद्ववतजन एवं शोधार्थी इसका लाभ उठाते रहते हैं ।

स्ंग्रहालय अभि विकास की अवस्था में है और विभिन्न संस्थाओं, स्थलों एवं जनसामान्य से स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी सामग्रियों को प्राप्त करने के प्रयास जारी हैं । इस संग्रहालय का प्रमुख उद्देष्य मेरठ परिक्षेत्र एवं देष के अन्य भागों में स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं की जानकारी और उनसे सम्बन्धित सामग्रियों का संकलन, संरक्षण, प्रदर्षन, प्रकाषन तथा देषी विदेषी पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उपलब्ध कराना है ।

संग्रहालय समय – प्रातः 10:30 से सायं 4:30 बजे तक । प्रत्येक सोमवार व माह के द्वितीय शनिवार के बाद पड़ने वाले रविवार एवं अन्य सार्वजनिक अवकाषों में संग्रहालय बन्द रहेगा ।

नोट : अन्य जानकारी के लिये सम्पर्क करें –

संग्रहालयाध्यक्ष,
राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, शहीद स्मारक,
दिल्ली रोड, मेरठ, उ0प्र0 (भारत)।
पिन कोड : 250001
दूरभाष संख्या – 0121–2404367
E-mail : museummeerut@gmail.com